SIX-FOLD POLICY

9. *Six fold policy*

कौटिल्य षाड्गुण्य नीति

MD:— अर्थशास्त्र में लिखा है "षाड़ गुण्यम प्रकृति मंडलम योनि:।" वस्तुतः कौटिल्य का षाड्गुण्य नीति उस मंडल सिद्धान्त का ही सहायक तथ्य है। अर्थशास्त्र में कौटिल्य ने सप्तांग मण्डल सिद्धान्त एवं उसके पश्चात षाडगुण नीति का वर्णन किया है। यहाँ उसने 'सप्तांग' अर्थात राज्य के सात तत्वों की परिपूर्णता के लिए सिद्धान्त में मण्डल सिद्धान्त द्वारा निर्धारित स्थिति के अनुकूल 'षड्गुण' के अंतर्गत राज्यों के वैदेशिक नीति की विवेचना की है।

'अर्थशास्त्र' के सप्तम अधिकरण में उसके षड्गुण सिद्धान्त का स्पष्ट वर्णन है। उसके अनुसार वैदेशिक नीति मुख्यतः छह प्रकार की हो सकती है। वे हैं— 1) संधि 2) विग्रह 3) आसन 4) यान 5) संश्रय 6) द्वैधीभाव।

कौटिल्य ने इन नीतियों के सम्बन्ध में कहा है कि जब कुछ शर्तों के आधार पर दो राजाओं के मध्य परस्पर मेल हो जाता है तो उसे संधि कहते हैं। जब दो राजा परस्पर शत्रुता की नीति अपनाते हैं तो उसे विग्रह की नीति कहते हैं। जब कोई राजा उदासीन एवं शांत हो जाता है तो उस नीति को आसन कहते हैं। संश्रय या भय से किसी शक्तिशाली राजा की शरण में चले जाने को संश्रय की संज्ञा दी जाती है। जब एक ही समय में एक राजा से संधि एवं विग्रह की नीति का निर्वाह किया जाता है तो उसे द्वैधीभाव कहते हैं।

कौटिल्य ने इन नीतियों के प्रयोग के संबंध में कहा है कि शत्रु की तुलना में अपने को निर्बल समझनेवाले राजा को संधि की नीति अपनानी चाहिए। अपने को प्रबल समझनेवाला राजा विग्रह की नीति अपना सकता है। यदि राजा यह समझे कि वह न शत्रु को परास्त कर सकता है एवं न शत्रु ही उसे मुँह की खानी दे सकता है तो उसे आसन की नीति अपनानी

Scanned with CamScanner

चाहिए। परन्तु यदि वह शत्रु की तुलना में अपेक्षाकृत अधिक शक्तिशाली हो तो उसे यान की नीति अपनानी चाहिए। जब राजा बहुत शक्तिहीन हो तो उसे संश्रय की नीति अपनानी चाहिए। जब वह समझता कि दूसरे राज्य की सहायता से वह अपने शत्रु राज्य को पराजय कर सकता है। सभी नीतियों का प्रधान ध्येय शत्रु की तुलना में अपने को शक्तिशाली बनाकर राज्य विस्तार करना है। अतएव कौटिल्य ने काल एवं स्थितिनुसार षड्गुण नीति की रचना जिसे विस्तृत रूप में विवरण इस प्रकार प्रकट किया जा सकता है।

1) संधि :- कौटिल्य के अनुसार यदि कोई राजा शक्तिशाली राजा से घिर जाए तो उसे शीघ्र ही सम्मानित शर्तों पर संधि कर लेनी चाहिए। इस समय दुर्बल राजा पर तीन प्रकार की संधि थोपी जा सकती है। प्रथम दंडोपनत संधि जिसके द्वारा निर्बल राजा स्वयं अपने को या सेनापति को या राजकुमार को प्रबल राजा की सेवा में बन्धक के रूप में देकर संधि कर लेता है। द्वितीय कोष संधि के अनुसार दुर्बल राजा को अपना कोष प्रबल राजा को दे देनी चाहिए। तृतीय देशोपनत संधि के अनुसार दुर्बल राजा अपने राज्य की भूमि का कुछ अंश प्रबल राजा को सुपुर्द कर देता है।

इन संधियों के पालन हेतु 'सत्यता' और शपथ पर बल दिया जाता है। इसके अनुसार सत्य एवं शपथ इस लोक एवं परलोक दोनों जगह स्थायित्व प्रदान करते हैं।

२) विग्रह :— विग्रह की नीति शत्रुता की नीति है। कौटिल्य के अनुसार जब कोई राजा यह महसूस करे कि शत्रु राज्य के आक्रमण का सामना वह सफलतापूर्वक कर सकता है तो उसे संधि की नीति का परित्याग कर विग्रह की नीति का अनुसरण

करना चाहिए। साथ ही जब यह देखें कि शत्रु राज्य विपत्ति में निमग्न है, अपनी प्रजा उससे विरक्त हो रही है, वह दुर्बल होता जा रहा है, वह इस की सीमा पर युद्ध में उलझा हुआ है तथा एक सुरक्षित स्थान से शत्रु की सीमा को आसानी से नष्ट किया जा सकता है तब विग्रह की नीति का निःसन्देह (निर्वाह करना) श्रेयस्कर होगा।

परन्तु विजय अभिलाषी राजा जब यह देखें कि संधि और विग्रह दोनों से समान लाभ की प्राप्ति है तो उसे विग्रह की जगह संधि की नीति अपनानी चाहिए क्योंकि विग्रह में धन एवं जन की हानि होती है।

3) आसन :- आसन नीति अर्थात् चुपचाप रहने की नीति। किसी राजा को तभी अपनानी चाहिए जब वह समझता है कि वह इतना समर्थ न है कि शत्रु को हानि पहुँचा सके और शत्रु ही इतना प्रबल है कि उसको हानि पहुँचा सके। आसन नीति का पालन इस आशा से किया जाता है कि शत्रु कालान्तर में दुर्बल हो सकता है या विपत्ति में फँस सकता है या किसी अन्य राजा से युद्ध में उलझ सकता है। साथ ही कालान्तर में विजयी (अभिलाषी) राजा शक्तिशाली हो सकता है।

4) यान :- यान जो कि शत्रु पर आक्रमण की तैयारी की नीति है। वह शत्रु की अपेक्षा निश्चित रूप से अधिक शक्तिशाली होता हो साथ सामान्यतः विग्रह एवं यान की नीति साथ-साथ चलती है परन्तु यदि विजीगिषु को विग्रह एवं यान की नीति सफल बना सकता है परन्तु कौटिल्य ने यह स्पष्ट कर दिया है कि यदि यान एवं आसन में समान लाभ की आशा हो तो आसन की नीति को ही अपनानी चाहिए।

5) संश्रय:- संश्रय अर्थात शरण लेने की नीति के संकेत का सूचक है। यदि कोई राजा शत्रु की तुलना में स्वयं को दुर्बल समझता है और प्रबल शत्रु उस पर आक्रमण करता है या इसकी धमकी देता है तो वह राजा किसी अन्य राजा की शरण ले सकता है परन्तु राजा को उसी राज्य में शरण लेनी चाहिए जो शत्रु की तुलना में अधिक शक्तिशाली हो। साथ ही वह उस राजा का मित्र भी हो। राजा स्वयं अपने दुर्ग में छिप सकता है परन्तु असुरक्षा की स्थिति में शत्रु के समक्ष आत्म-समर्पण कर देना चाहिए।

~~6) द्वैधीकरण:->~~

6) द्वैधीभाव:-> द्वैधीभाव अर्थात् एक ही समय एक राजा से संधि एवं दूसरे से विग्रह की नीति विजय अभिलाषी राजा को उस समय अपनानी चाहिए जब वह यह देखता है कि एक राज्य से संधि कर वह अपने को अधिक शक्तिशाली बना सकता है। कौटिल्य ने स्पष्ट किया है कि इस नीति के अन्तर्गत संधि शक्तिशाली राजा से और विग्रह निर्बल राजा से करनी चाहिए। साथ ही संश्रय एवं द्वैधीभाव दोनों नीतियों से समान लाभ की आशा हो तो द्वैधीभाव का ही अनुसरण करना चाहिए। क्योंकि इससे मुख्य रूप से अपना हित सफल होता है।

इस प्रकार अपने राज्य के हित के मुख्य उद्देश्य को ध्यान में रखकर ही इन छह नीतियों का अनुसरण किसी राजा को करना चाहिए। इन नीतियों में परिस्थितियों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इस नीतियों कौटिल्य से पूर्व के एक आचार्य वात्याची के अनुसार विदेशी नीति मुख्यतः दो गुणों - शांति एवं युद्ध पर आधारित होता है। किन्तु कौटिल्य ने

स्पष्ट किया है कि षड प्रकार के भिन्न-भिन्न स्थितियों व परिस्थितियों युद्ध एवं शांतिकाल में आती है। अतः परिस्थितियों के अनुसार षड-नीतियों को अपनाना चाहिए। कौटिल्य के इस षड्गुण नीति के सम्बन्ध में U.N. Ghosal ने लिखा है:

— "The object give of foreign Policy is progressive advance from a condition of decline to that of equilibrium and there to that of Progress"

Criticism :- (आलोचना) कौटिल्य के षड्गुण नीति का एवं विदेश नीति संबंधी अन्य तथ्यों का भी आलोचना की गयी है।

1) नील कं० शास्त्री के अनुसार कौटिल्य का अर्थशास्त्र "साम्राज्यवादी राजनीति का नियमावली है। क्योंकि यह देश विषय के आदर्श को प्रचार करता है"

किन्तु षड्गुण नीति से स्पष्ट होता है कि कौटिल्य एक और विजीगीषु को राज्य विस्तार का मार्गदर्शन करता है तो दूसरी ओर दुर्बल राजाओं को भी यह सिख देता है कि वह कैसे प्रबल राजा के अधीनता से बच सकता है।

2) आलोचकों के अनुसार आधुनिक युग के विज्ञान में षड्गुण के नीतियों को लागू नहीं किया जा सकता है।

किन्तु यह स्पष्ट है कि 1971 के बंगलादेश के युद्ध में भारत ने द्वैधीभाव नीति के अनुकूल ही रूस मित्रता की संधि कर पाकिस्तान को परास्त किया था।

मूल्यांकन :— D.W Brown ने ठीक ही कहा है

"what ever our individual appraisal may be few will fail to see - the ironical relevance of Kautilay's analysis of foreign Policy to our present day problems of Power Politics"

और चूँकि षडगुण नीति कौटिल्य की नीति का एक आधार तथ्य है इसलिए उसकी भी उपयोगिता व संदर्भ आज विद्यमान है।

Shashi Bhushan Kumar, Dept. of Pol. Sc.,
R.N College, Hajipur [9334481906]